



# एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 04, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2024)

[www.agriarticles.com](http://www.agriarticles.com) पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एन.: 2582-9882

## प्राकृतिक खेती: समय की मांग

(\*शशि शेखर<sup>1</sup> एवं डॉ. जय प्रकाश कन्नौजिया<sup>2</sup>)

<sup>1</sup>शस्य विज्ञान विभाग, जे.एस. विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद

<sup>2</sup>कृषि विभाग, मेरठ इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, मेरठ

\*संवादी लेखक का ईमेल पता: [shekhar.shashi276@gmail.com](mailto:shekhar.shashi276@gmail.com)

प्राकृतिक खेती जैसा कि हम सब जानते हैं परंपरा से भी जुड़ा हुआ है और यह आज के समय की मांग भी बन चुका है। खेती के आधुनिक तौर-तरीकों को अपनाकर हम अपनी खाद्य जरूरतों को पूरा करने लायक हो तो गए हैं मगर रसायनों के अंधाधुंध प्रयोग के कारण हमने धरती मां को बीमार भी कर दिया है। बीमार होती मिट्टी और बढ़ते प्रदूषण में आज पूरी दुनिया को चिंता में डाल दिया है मगर भारत के पास इस समस्या का एक बेहतरीन निदान है और इस पर काम भी बहुत तेजी से चल रहा है। प्राकृतिक खेती जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह तकनीक पूरी तरीके से प्राकृतिक संसाधनों और कुदरती सामग्री पर आधारित है। यह खेती की ऐसी तकनीक है जो मिट्टी की भौतिक संरचना में सुधार करने के साथ-साथ उसकी उर्वरता में भी वृद्धि करता है। व फसलों को जलवायु परिवर्तन के मार का सामना करने के काबिल भी बनाता है। प्राकृतिक खेती के निम्नलिखित लाभ हैं—

1. लागत कम लगती है।
2. पानी की बचत होती है।
3. उत्पादन भी बढ़ जाता है।

प्राकृतिक खेती की इस तकनीक में एक देसी गाय से 30 एकड़ जमीन के लिए खाद तैयार हो जाती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्राकृतिक खेती मुख्यतः देसी गाय पर आधारित खेती की एक तकनीक है जो जमीन को सेहतमंद बनाने के सिद्धांत पर कार्य करती है क्योंकि पौधे अपना सारा पोषण मिट्टी से ही लेते हैं। मिट्टी जितनी ताकतवर होगी उपज उतनी ही ज्यादा और गुणवत्ता वाली होगी। दरअसल रसायन ने ना सिर्फ मिट्टी को कमजोर किया है बल्कि फसलों को भी जहरीला बना दिया है। कई बार विदेशी खरीदार भी मानक से ज्यादा कीटनाशक पाए जाने के कारण हमारी फसलों को खरीदने से मना कर देते हैं। इसका कहीं ना कहीं दुष्प्रभाव हमारी कृषि क्षेत्र को उठाना पड़ता है। यह रसायन सिंचाई के जल के साथ ही भूमिगत जल में जा मिलते हैं और उसे प्रदूषित करते हैं। यही वजह है कि आज प्राकृतिक खेती समय की मांग के साथ साथ जरूरत भी है। यही कारण था कि प्राचीन समय में हमारे पूर्वज प्रकृति द्वारा प्राप्त प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर प्राकृतिक खेती करते थे। मिट्टी में 16 तरह के पोषक तत्व होते हैं जो फसलों की अच्छी पैदावार बढ़ाने के लिए जरूरी है और यदि इनमें से एक भी तत्व की कमी हो जाए तो बाकी बचे 15 तत्वों का बहुत ज्यादा फायदा फसल को नहीं मिल पाता है। देसी गाय के गोबर में यह सभी तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। गाय के गोबर और मूत्र की गंध केचुओ की संख्या बढ़ाने में मददगार होती है। जैसा कि हम जानते हैं कि केचुए किसान मित्र माने जाते हैं। दूसरी ओर प्राकृतिक खेती के लिए गहरी जुताई की भी आवश्यकता नहीं पड़ती है और सिंचाई भी पौधों से कुछ ही दूरी पर की जाती है जिसमें सिर्फ 10 फीसदी ही पानी की आवश्यकता पड़ती है। दूर से पानी देने की वजह से जड़ों की लंबाई के साथ ही साथ तनों की मोटाई व पौधों की लंबाई में भी इजाफा होता है। इसमें जो उत्पादन होता है उसने शुरुआत में तो थोड़ी गिरावट होती है मगर जहां मिट्टी की उर्वरता बढ़ जाती है तो उत्पादन में 15 से 20: तक की बढ़त देखी गई है। प्राकृतिक खेती में पौधों की दिशा उत्तर दक्षिण होती है इस वजह से पौधों को भरपूर मात्रा में सूरज की ऊर्जा व रोशनी मिल पाती है इससे पौधे उसी तरीके से अपना शरीर निर्माण

कर पाते हैं व कीट लगने की आशंका भी कम हो जाती है, साथ ही साथ पौधों में पोषक तत्व भी संतुलित मात्रा में इकट्ठे हो जाते हैं। खेती की इस विधि में देशी बीजों की भी अहम भूमिका होती है देशी बीज पोषक तत्व कम लेते हैं और पैदावार भी ज्यादा देते हैं।

भारतवर्ष में प्राकृतिक खेती का जनक डॉ. सुभाष पालेकर को माना जाता है। इन्होंने सन 1972 में सर्वप्रथम अपने फार्म पर रासायनिक खेती पर काम करना शुरू किया किंतु बाद में प्राकृतिक खेती का विचार इनके मन में आया। 1972 से 1985 तक रासायनिक विधि से खेती करने पर इन्होंने पाया कि प्रारंभ में तो पैदावार बढ़ी किंतु बाद के वर्षों में इसमें कमी देखी गई। वहीं दूसरी ओर आदिवासियों के साथ काम करते हुए इन्होंने पाया की जंगलों में पौधों के विकास के लिए किसी बाहरी तत्व की जरूरत नहीं होती बल्कि पैदावार के लिए जरूरी संसाधन इन्हें प्रकृति से ही सरलता से प्राप्त हो जाते हैं। तत्पश्चात 6 वर्ष की कठोर परिश्रम के उपरांत बिना रसायनों वाली तकनीक जीरो बजट नेचुरल फार्मिंग इजाद की, जिसके लिए इन्होंने 2016 में भारत सरकार द्वारा श्पदम श्रीश पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

भारत सरकार द्वारा भी परंपरागत कृषि विकास योजना के अंतर्गत भारतीय कृषि पद्धति के नाम से एक उप योजना तैयार की है जिसके तहत किसान भाइयों को 3 साल के लिए प्रति हेक्टेयर रु 12200 की आर्थिक सहायता दी जाती है। इस उपयोजना में अब तक 4, 09, 400 हेक्टेयर क्षेत्र कवर हो चुका है और 8 राज्यों के लिए रु 4981 लाख जारी किए जा चुके हैं। उत्तर प्रदेश सरकार ने भी 35 जिलों की लगभग 98760 हेक्टेयर जमीन को प्राकृतिक खेती के लिए प्रस्तावित किया है जिस पर लगभग रु. 19772 लाख का खर्च अनुमानित है तथा जिससे लगभग 51, 450 किसान लाभान्वित होंगे। अकेले प्रयागराज जिले में लगभग 1000 हेक्टेयर से भी ज्यादा जमीन को प्राकृतिक कृषि पद्धति के अंतर्गत चुना गया है जिससे लगभग 913 किसानों को फायदा पहुंचने का अनुमान है।

आज प्राकृतिक खेती की लोकप्रियता लगातार बढ़ती जा रही है। खास तौर पर छोटे और सीमांत किसानों के बीच क्योंकि ये उनकी जेब के अनुकूल है। ऐसे किसानों के पास आय के बहुत कम साधन होते हैं और खेती में पड़ने वाली भारी लागत इनकी कमर तोड़ देती है। इस खेती में उर्वरकों और कीटनाशकों पर इन्हें जरा भी खर्च नहीं करना पड़ता है इसलिए खेती की यह तकनीक इनके लिए किसी वरदान से कम नहीं है। प्राकृतिक खेती के माध्यम से किसान भरपूर उपज लेता है व उनकी गुणवत्ता भी रासायनिक खेती की अपेक्षा काफी अच्छी होती है और उपज का बाजार भाव भी अच्छा मिलता है।

प्राकृतिक खाद दो तरीकों से बनाई जाती है पहला तरीका यह है कि एक देशी गाय का 24 घंटा का गोबर जो लगभग 10 ाह होगा, 24 घंटे में इकट्ठा किया हुआ मूत्र 8 से 10 लीटर लगभग, 1.5 से 2 ाह गुड व 1.5 से 2 ाह गुड व 1.5 से 2 ाह दाल का बेसन (किसी भी दाल का) और पेड़ के नीचे से एक मुट्टी मिट्टी को लेकर एक प्लास्टिक के ड्रम में 180 लीटर पानी के साथ मिलाकर सुबह शाम पांच 5-5 मिनट एक लकड़ी के डंडे की सहायता से क्लॉक वाइज मिलाते हैं। तत्पश्चात इस मिश्रण को एक छायादार जगह पर रख देते हैं। 4 से 6 दिन में यह खाद तैयार हो जाएगा जोकि 1 एकड़ खेत के लिए पर्याप्त होगा इस प्रकार 30 दिन में 30 एकड़ क्षेत्र के लिए खाद तैयार हो जाएगी। दूसरा तरीका धन जीवामृत है। इसमें 100 किलोग्राम गाय का गोबर सुखा कर बारी कर लेते हैं। साथ ही 24 घंटे का गोमूत्र, 1.5 ाह गुड, 1.5 ाह बेसन और एक मुट्टी मिट्टी मिलाकर छायादार जगह पर ढक कर रख देते हैं तथा इसे यूरिया की तरह 6 से 7 महीने तक कभी भी इस्तेमाल कर सकते हैं। इसी तरह कीटनाशक भी गोबर, गोमूत्र, पौधे के पत्ते, तंबाकू, लहसुन और लाल मिर्च आदि के मिश्रण से तैयार किए जाते हैं।

प्रायः यह देखा गया है कि जब हम प्राकृतिक खेती करते हैं तो इसके द्वारा सूक्ष्मजीव जो जड़ों या मिट्टी में रहते हैं उनके द्वारा कई सूक्ष्म तत्व पौधों को प्राप्त होते हैं। जिसकी वजह से पौधे स्वस्थ और सुदृढ़ होते हैं तथा उन पर कीटों का भी कम से कम प्रभाव पड़ता है।

रासायनिक खेती में शंकर व जेनेटिकली मॉडिफाइड बीजों का उत्पादन देशी बीजों से ज्यादा होता है मगर प्राकृतिक खेती में देशी बीजों का उत्पादन संकर बीजों व ळड बीजों की अपेक्षा ज्यादा होता है। यह भी देखा गया है कि देशी बीजों में पोषण मूल्य, औषधि मूल्य रासायनिक खेती से पैदा शंकर पौधों की अपेक्षा कई गुना ज्यादा होता है अर्थात मानव पोषण की दृष्टि से भी देशी बीजों से पैदा प्राकृतिक फसलें सर्वोत्तम हैं। देशी गाय पालन करने वाले किसानों के लिए प्राकृतिक खेती और भी आसान है क्योंकि यह विधि पशु अव शिष्ट के इस्तेमाल पर निर्भर है। जैसा कि हम जानते हैं कि

किसानों को अक्सर मौसम की मार भी झेलनी पड़ती है। ऐसे में इन सब चुनौतियों का समाधान प्राकृतिक खेती को अपनाकर ही किया जा सकता है। प्राकृतिक खेती में फसलें मौसम की मार और जलवायु में हो रहे बदलाव को आसानी से सहन कर लेती हैं। अर्थात् यह कहना गलत ना होगा कि प्रकृति में उपस्थित सभी जैविक और अजैविक घटकों का समन्वय ही प्राकृतिक खेती को सफल बनाता है।

प्राकृतिक खेती अब समय की मांग भी है और जरूरत भी। बेहतर स्वास्थ्य और संतुलित पर्यावरण के लिए किसान तेजी से 'ठछ्ठ अपना रहे हैं। यह रासायनिक खेती की तुलना में कम खर्चीला और बेहतर मुनाफा देने में सक्षम है। प्राकृतिक खेती में प्रकृति अपने हिसाब से खेती के हर पहलू को नियंत्रित करती है जिसमें बाहर से कुछ शामिल नहीं करना होता है। प्राकृतिक खेती की यह संकल्पना है कि जहां खेत है वही उसकी पोषण की व्यवस्था हो और वहीं पर ही धरती को समृद्ध बनाने की व्यवस्था भी हो साथ ही साथ किसान का उत्पादन ठीक से हो उसके लिए प्रकृत खुद को अच्छी तरीके से प्रबंधित कर रही है इसका भी ध्यान देना होगा। इसमें मुख्य भूमिका पशु-पक्षी, वृक्ष, सूक्ष्म जीवों और जैविक-अजैविक घटकों की होती है। इस तरह से देखा जाए तो प्राकृतिक खेती व उत्पाद मौजूदा समय की मांग है। प्राकृतिक कृषि करके एक वह किसान जहां ZBNF के लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं वहीं दूसरी ओर इससे मिट्टी और पर्यावरण को नुकसान से बचा सकते हैं।